"कारको भाव नाशाय"

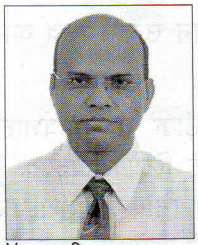

डॉ. सुशील अग्रवाल

कारको भाव नाशाय (काभाना) का अर्थ है कि यदि कोई कारक ग्रह अपने भाव में, जिसका वह कारक है, स्थित हो तो वह भाव फलों का नाश करता है। इस लेख में इस विषय पर सोदाहरण चर्चा करने के पश्चात् ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करेंगे।

1. काभाना का शास्त्रीय सन्दर्भ

बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, जैमिनी सूत्रम, उत्तर कालामृत और जातक तत्त्वम में काभाना का उल्लेख नहीं है परन्तु फलदीपिका, भावार्थ रत्नाकर, जातक पारिजात, सारावली आदि में कारक संबंधित हानि का उल्लेख मिलता है।

भावार्थ रत्नाकर, धनयोग अध्याय के अनुसार यदि विभिन्न कारक अपने भाव में स्थित होते हैं तो भाव के पोषक तत्व की हानि होती है और बहुत कम भावफल मिलते हैं।

फलदीपिका, भावचिन्ता अध्याय के अनुसार नवम में सूर्य, चौथे में चन्द्रमा, तृतीय में मंगल, पंचम में गुरु, सप्तम में शुक्र और अष्टम में शनि भाव सम्बंधित क्लेश करते हैं।

सारावली, संज्ञातत्वम अध्याय के अनुसार विशिष्ट स्थानों में स्थित होने से ग्रह निष्क्रिय हो जाते हैं। जैसे, सूर्य युत चन्द्र, चतुर्थ भाव में बुध, पंचमस्थ बृहस्पति, द्वितीय में मंगल, षष्ठ में शुक्र और सप्तम भाव में शनि। इस ग्रन्थ में पंचम भाव के अतिरिक्त सभी ग्रहों की भिन्न स्थिति से हानि का वर्णन है।

जातक पारिजात, ग्रहरूपगुण अध्याय के अनुसार कुछ ग्रहों का विशेष नियम होता है। चतुर्थ में अकेला बुध, पंचम में अकेला गुरु, सप्तम में अकेला शुक्र सदैव भाव को बिगाड़ता है परन्तु अष्टम में शनि भाव वृद्धि करता है।

इसके अतिरिक्त, ग्रंथों में और विद्वानों के अन्य निम्न मत भी हैं :

i) उत्तर कालामृत, ग्रह भावफल खण्ड के अनुसार यदि किसी भाव के स्वामी तथा उस भाव के कारक में नैसर्गिक शत्रुता हो तो उस भाव की हानि होती है।

ii) भाव में कारक सम्बंधित गुणों का समावेश होता है इसीलिए जब कारक उसी भाव में स्थित होते हैं तो गुणों की अत्यधिकता रूकावट बनती है।

iii) भाव, भावेश और कारक में से दो घटक एक ही जगह इकट्ठे होंगे तो उन पर किसी भी प्रकार का अशुभ प्रभाव उनके साझे तथ्य की हानि करेगा।

iv) एक मत यह है कि यदि काभाना लागू हो रहा हो तो कारक अपने मुख्य कारकत्वों में से किसी एक की हानि करता है। जैसे, गुरु पंचमस्थ होकर शिक्षा और संतान में से किसी एक की ही हानि करता है।

v) फलदीपिका, भावचिन्ता अध्याय में मन्त्रेश्वर जी ने स्पष्ट लिखा है कि काभाना अन्य आचार्यों का मत है।

vi) जातक तत्त्वम के अनुसार ग्रह यदि स्वराशि, मूलत्रिकोण या उच्च राशि में स्थित हों तो कभी अनिष्ट फल नहीं देते।

उपरोक्त शास्त्रीय सन्दर्भ एवं विभिन्न मतों के आधार पर काभाना पर कोई भी स्पष्ट मत निर्धारित नहीं हो पा रहा है। इसीलिए इनको आगे उदाहरणों के आधार पर परखने की आवश्यकता है।

2. भाव कारक

सामान्यतः कारक ग्रहों का बलाबल भाव फल की गुणवत्ता दर्शाते हैं। कारक ग्रह को एक अन्य प्रकार से परिभाषित करें तो ग्रहों के कारकत्व से उनके विशेष फल देने की शक्ति का बोध होता है।

बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार सूर्य, गुरु, मंगल, चन्द्र, गुरु, मंगल, शुक्र, शनि, गुरु, बुध, गुरु और शनि ये क्रमशः भावों के कारक हैं।

फलदीपिका के अनुसार चतुर्थ भाव के बुध, षष्ठम के शनि और दशम के गुरु, सूर्य व शनि भी कारक होते हैं।

उत्तर कालामृत, भावार्थ रत्नाकर, जातक पारिजात और जातकतत्त्वम के अनुसार फलदीपिका के कारकों के अतिरिक्त नवम के कारक सूर्य भी होते हैं।

3. फलित का सामान्य नियम

ज्योतिष फलित का एक सर्वमान्य नियम है कि किसी भी भाव सम्बंधित फलों के लिए उस भाव, उसके भावेश और उसके कारक का आकलन किया जाना आवश्यक है क्योंकि उस भाव के शुभाशुभ फल इन तीनों घटकों की स्थिति एवं बलाबल के अनुसार सम्बंधित दशा आने पर मिलते हैं। यदि तीनों बलवान हों तब उस भाव का पूर्ण फल कहना चाहिए और यदि तीन में से दो बलवान हों तो आधा फल कहना चाहिए तथा केवल एक ही बलवान होने पर बहुत थोड़ा फल होता है।

4. उदाहरण

आइये, अब कुछ उदाहरणों के माध्यम से चर्चा करते हैं।

उदाहरण–1 : 14 नवम्बर 1889, 23:03 बजे, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।

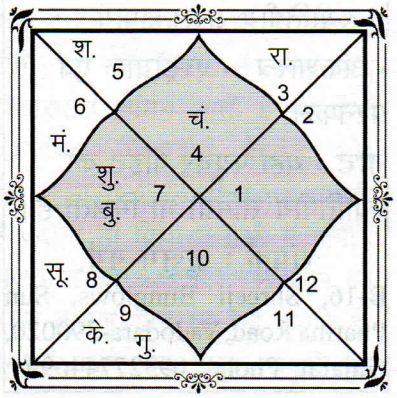

यह नेहरु जी की कुंडली है जिनका कोई छोटा भाई नहीं था। तृतीय भाव कारक मंगल शत्रु राशि में शुभ प्रभाव रहित तृतीयस्थ हैं।

उदाहरण–2 : 14 जनवरी 1988, 00:31 बजे, वाशिंगटन डी. सी., अमेरिका।

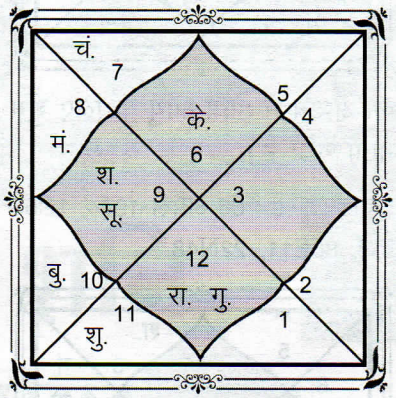

जातक एक अमेरिकी अभिनेत्री का बेटा है जिसका अनुज अक्तूबर 1990 में हुआ। तृतीय भाव कारक मंगल स्वराशिस्थ होने के साथ–साथ बली गुरु से भी दृष्ट है। भाव कारक ने तृतीयस्थ होकर भाव फलों का नाश नहीं किया।

उदाहरण–3 : 9 अक्तूबर 1904, 11:12 बजे, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

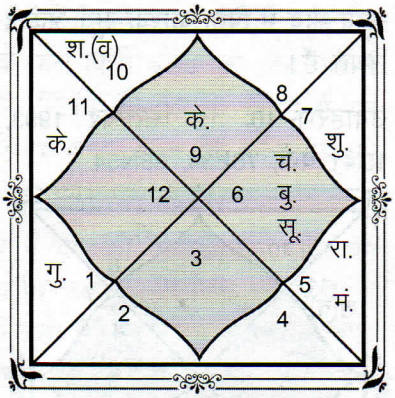

श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की कुंडली में गुरु पंचम भाव में मित्र राशि में हैं। शास्त्री जी के दो पुत्र थे।

उदाहरण– 4: 27 अक्तूबर 1926, 3:30 बजे, लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया, अमेरिका।

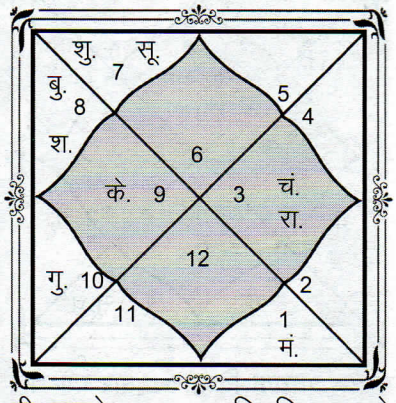

श्री हाल्डेमान, राष्ट्रपति निक्सन के समय में व्हाइट हाउस के मुख्य अधिकारी थे। इन्होंने कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी से पढ़ाई की और इनके दो बेटे और दो बेटियां थीं। पंचम भाव के कारक ने पंचमस्थ और नीच राशि में होकर भी हानि नहीं की क्योंकि भाव बली हैं।

उदाहरण–5 : पुरुष, 11 दिसम्बर 1966, 18:30 बजे, अजमेर, राजस्थान।

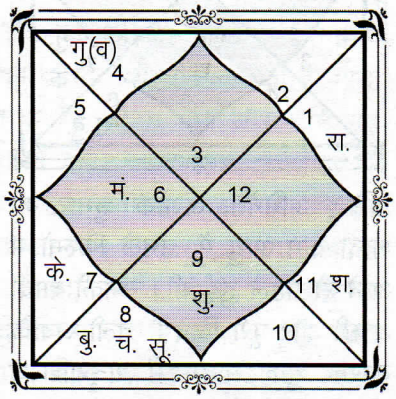

जातक की आर्थिक स्थिति पहले की अपेक्षा बहुत खराब है जिस कारणवश पत्नी से तनाव रहता है। जातक के दो पुत्र और एक पुत्री हैं। सप्तम कारक शुक्र सप्तम में अकेले हैं परन्तु राशीश गुरु बली हैं।

उदाहरण–6 : पुरुष, 4 अगस्त 1929, 16:00 बजे, 76E20, 21N50

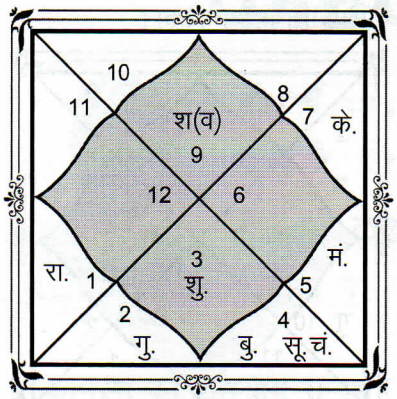

प्रसिद्ध गायक किशोर कुमार की चार शादियाँ हुई थीं जबकि सप्तम भाव कारक शुक्र सप्तम में मित्रराशिस्थ होकर अकेले हैं।

उदाहरण–7 : पुरुष, 13 अक्तूबर 1911, 14:55 बजे, 87E00, 25N15

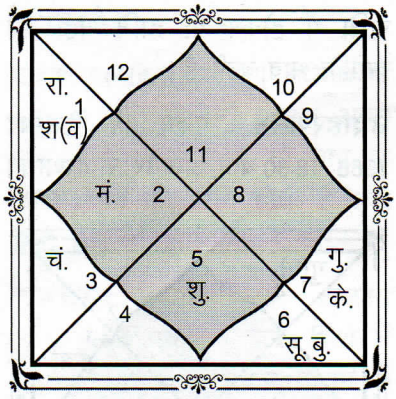

प्रसिद्ध अभिनेता अशोक कुमार की शादी कम आयु में, उनके फिल्मों में आने से पहले हुई थी। उनकी शादी अच्छी और पूरी जिंदगी चली जबकि कारक शुक्र सप्तम में शत्रुराशिस्थ होकर अकेले हैं।

उदाहरण–8 : 28 सितम्बर 1929, 21:50 बजे, 75E45, 2N40

प्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर जी के अष्टम भाव में कारक शनि अकेले हैं परन्तु आयु हानि नहीं हुई। शनि

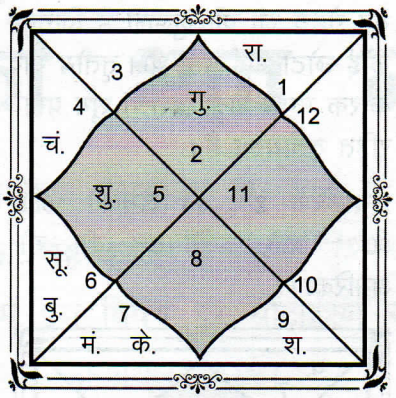

का अष्टम में होना आयु के लिए शुभ माना गया है।

उदाहरण–9 : 06 अप्रैल 1974, 12:56 बजे, 86E11, 22N48

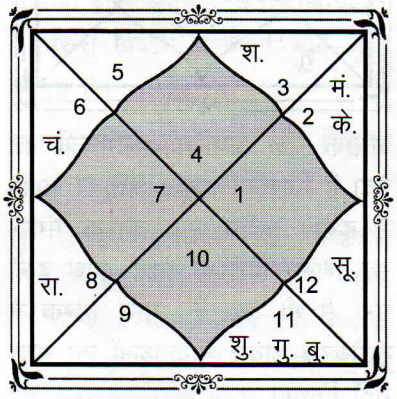

जातक की माता जीवित नहीं हैं परन्तु पिता जीवित हैं और उनसे उसके सम्बन्ध भी अच्छे हैं जबकि नवम भाव में पिता कारक सूर्य अकेले स्थित हैं।

उदाहरण–10: 12 सितम्बर 1993, 13:41 बजे, 76E34, 28N54

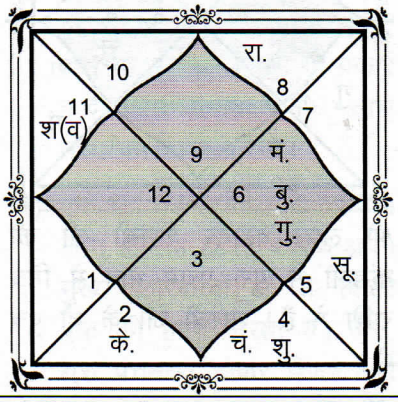

जातिका और पिता के परस्पर सम्बन्ध तनावपूर्ण हैं क्योंकि वह (जातिका के अनुसार) उसके जीवन के हर क्षेत्र में दखलअंदाजी करते हैं जबकि सूर्य नवमेश और पिता कारक होकर नवम में अकेले हैं।

5. निष्कर्ष

इस प्रकार हमने अनेकों उदाहरणों में देखा कि 'कारको भाव नाशाय' का सूत्र अधिकांश उदाहरणों में नहीं लगा इसीलिए केवल कारक की भाव में स्थिति मात्र से ही भावफल का नाश होने का फलित करना उचित नहीं लगता। यदि कारक ग्रह पीड़ित हो, भावेश का शत्रु हो और भाव में अकेला स्थित हो तो प्रबल हानि कर सकता है। ❐

पता : बी– 301, सोम अपार्टमेंट,
सेक्टर–6, प्लॉट–24, द्वारका,
नई दिल्ली–75
मो. 9810162371

कंप्यूटर जन्माक्षर

विश्व प्रसिद्ध सॉफ्टवेयर लियो स्टार द्वारा निर्मित

- नवजात शिशुओं के लिये भाग्यशाली नाम एवं नक्षत्रफल
- विवाह के लिए कुंडली मिलान
- लाल किताब के सरल उपाय
- ज्योतिषीय सरल उपाय
- अंकशास्त्र • एस्ट्रोग्राफ एवं प्रश्नफल

नोट : यहां फ्यूचर पॉइंट की ज्योतिषीय सामग्री भी मिलती है।

संपर्क : कुसुम गर्ग,
B-16, Shreeji Bunglows, Sun Pharma Road, Vadodara-390020, Gujarat, Phone : 09327744699